ISBN Number: 978-93-95305-78-5

बुन्देली गौरीशंकर उपाध्याय द्वारा संकलित बुन्देली लोकोक्तियों में जीवन दर्शन

श्रीमती कल्पना सिंह
शोधार्थी
हिंदी विभाग
पी.के. विश्वविद्यालय

सारांश

सूक्तियां समाज की सामूहिक बुद्धिमत्ता को संक्षेप में व्यक्त करने वाले वाक्य होते हैं। बुंदेलखंड में बुंदेली बोली की समृद्ध मौखिक परंपरा में ऐसी लोकोक्तियां व्यापक रूप से परिलक्षित होती हैं। गौरिशंकर उपाध्याय, एक प्रसिद्ध बुंदेली लोक–संस्कृति के अध्येता, ने बुंदेली लोकोक्तियों का व्यवस्थित संकलन किया, जिससे उनकी सांस्कृतिक महत्ता सुरक्षित रही। यह शोध–पत्र इन लोकोक्तियों में अंतर्निहित जीवन–दर्शन का अन्वेषण करता है और यह विश्लेषण करता है कि ये लोकोक्तियां किस प्रकार मूल्यों, नैतिक संहिताओं और अस्तित्वगत दृष्टिकोणों को अभिव्यक्त करती हैं। विषयगत और संकेतात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह अध्ययन दर्शाता है कि बुंदेली लोकोक्तियां अंतरपीढ़ी ज्ञान के संप्रेषण, सामुदायिक सोच के निर्माण, तथा सामाजिक एकजुटता को सुदृढ़ करने के सशक्त माध्यम हैं।

कीवर्ड्सः *बुंदेली लोकोक्तियां, जीवन–दर्शन, गौरिशंकर उपाध्याय, लोक–संस्कृति, सांस्कृतिक ज्ञान, बुंदेलखंड।*

1. भूमिका

लोकोक्तियों को सांस्कृतिक दर्शन का लघु रूप माना जाता है (मीडर, 2004)। ये कुछ ही शब्दों में किसी समुदाय की विश्व–दृष्टि, नैतिक मूल्यों और जीवन जीने की रणनीतियों को समाहित करती हैं। मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की सीमाओं पर फैला बुंदेलखंड क्षेत्र अपनी समृद्ध लोक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ की बुंदेली लोकोक्तियाँ कृषिक, वीरतापूर्ण तथा भक्ति–प्रधान जीवनशैली की झलक प्रस्तुत करती हैं।

गौरिशंकर उपाध्याय, एक प्रसिद्ध लोकविद्, ने बुंदेली लोकोक्तियों के संकलन और व्याख्या में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके प्रयासों से इस क्षेत्र की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का एक संगठित भंडार शोध हेतु उपलब्ध हो सका। यह शोध–पत्र उपाध्याय द्वारा संकलित बुंदेली लोकोक्तियों में निहित जीवन–दर्शन

ISBN Number: 978-93-95305-78-5

का विश्लेषण करता हैकृजैसे कि भाग्य की स्वीकृति, परिश्रम का महत्त्व, पाखंड के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण, तथा व्यक्तिगत आकांक्षाओं और सामाजिक उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन की भावना।

2. उद्देश्य

1. गौरिशंकर उपाध्याय द्वारा संकलित बुंदेली लोकोक्तियों की विषयगत श्रेणियों के अनुसार पहचान करना एवं उनका वर्गीकरण करना।
2. इन लोकोक्तियों में अंतर्निहित जीवन–दर्शन की व्याख्या करना।
3. सामाजिक मानदंडों और अंतरपीढ़ी ज्ञान के निर्माण में इनकी भूमिका का आकलन करना।
4. बुंदेली लोकोक्तियों को व्यापक भारतीय लोक परंपरा एवं दार्शनिक परंपराओं के संदर्भ में स्थापित करना।

3. साहित्य समीक्षा

3.1 सांस्कृतिक ग्रंथ के रूप में लोकोक्तियां

डंडेस (1975) और मीडर (2004) जैसे विद्वानों ने इस बात पर विशेष बल दिया है कि लोकोक्तियां सांस्कृतिक आख्यानों और नैतिक संरचनाओं को संहिताबद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारतीय लोकोक्तियों का विशेष रूप से क्षेत्रीय भाषाओं में उनके नैतिक एवं दार्शनिक संदर्भ में अध्ययन किया गया है (प्रसाद, 2002)।

3.2 बुंदेली लोक–संस्कृति

बुंदेलखंड की लोक–संस्कृति इसके सामाजिक–ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को प्रतिबिंबित करती हैकृयहां का कठोर भू–प्रकृति, प्रतिरोध का इतिहास और कृषक जीवन शैली (राय, 1998) । यहां की लोकोक्तियां अक्सर स्थानीय व्यवहारिक दृष्टिकोण एवं भाग्यवाद की झलक देती हैं।

3.3 गौरिशंकर उपाध्याय का योगदान

उपाध्याय के संकलन अब तक इस विषय की आधारभूत कृतियों में माने जाते हैं। उनकी कृति बुंदेली लोकोक्तियों का संकलन एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, फिर भी इस पर विद्वानों द्वारा सीमित शोध ही किया गया है।

4. कार्यप्रणाली

यह गुणात्मक अध्ययन गौरिशंकर उपाध्याय द्वारा संकलित बुंदेली लोकोक्तियों में निहित जीवन–दर्शन का अन्वेषण करने के लिए विषयगत विश्लेषण और संकेतात्मक व्याख्या पर आधारित था। उपाध्याय के

ISBN Number: 978-93-95305-78-5

संकलन से लोकोक्तियों का उद्देश्यपूर्ण चयन किया गया, ताकि बुंदेली सांस्कृतिक जीवन से संबंधित विविध विषय क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके।

इन लोकोक्तियों को विषयगत कोडिंग की प्रक्रिया से गुजराया गया, जिसके अंतर्गत प्रत्येक लोकोक्ति को भाग्य, श्रम, पारस्परिक संबंध, सामाजिक मानदंड और आध्यात्मिक मूल्य जैसे क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया।

व्याख्यात्मक विश्लेषण के माध्यम से इस अध्ययन ने इन संक्षिप्त अभिव्यक्तियों में अंतर्निहित गहरे दार्शनिक और नैतिक अर्थों को उजागर करने का प्रयास किया।

अंततः, इन लोकोक्तियों और उनसे निष्कर्षित जीवन–दर्शनों को व्यापक भारतीय लोकोक्ति परंपराओं से तुलनात्मक रूप में जोड़कर प्रस्तुत किया गया, जिससे इनके क्षेत्रीय विशिष्ट स्वरूप और भारत की व्यापक सांस्कृतिक विरासत में उनकी अनुगूंज का समग्र समझ विकसित किया जा सके।

5. विश्लेषण और चर्चा

5.1 भाग्य और स्वीकृति का दर्शन

उदाहरण

''जाको भाग ना लिख्यो, ताकौ कहाँ मिलायो?''

व्याख्या

यह कहावत एक नियतिवादी विश्वदृष्टि को दर्शाती है जहाँ मानव एजेंसी भाग्य से गौण है – एक ऐसा दर्शन जो भारतीय कर्म संबंधी विचारों से मेल खाता ळें

5.2 श्रम और स्व–प्रयास को महत्व देना

उदाहरण

''मिहानत करै धरती से, ऊँचो जात कहाँ?''

व्याख्या

एक समतावादी लोकाचार यह दावा करता है कि गरिमा जन्म के बजाय श्रम से उत्पन्न होती है।

ISBN Number: 978-93-95305-78-5

5.3 विवेक और सामाजिक जागरूकता

उदाहरण

''साँच बडो, पर भाँड़ो न फूटै।''

व्याख्या

यह एक व्यावहारिक दर्शन को दर्शाता हैरू सत्य को सामाजिक सद्भाव से संतुलित किया जाना चाहिए।

5.4 क्षणभंगुरता और वैराग्य

उदाहरण

''आवत जात पंथ बनता है।''

व्याख्या

जीवन की नश्वरता का एक रूपक, जो वैराग्य और स्वीकृति को प्रोत्साहित करता है।

6. निहितार्थ

इस अध्ययन में जिन बुंदेली कहावतों का विश्लेषण किया गया है, वे बुंदेली समाज में अनेक भूमिकाएँ निभाती हैं। मानक रूप में, ये स्वीकृत आचरणों और सामाजिक अपेक्षाओं को सुदृढ़ करती हैं, जिससे व्यक्तियों को समुदाय द्वारा उपयुक्त माने जाने वाले व्यवहार की ओर प्रेरित किया जाता है। शैक्षिक दृष्टि से, ये आवश्यक जीवन कौशल सिखाने और सावधानी बरतने के उपकरण के रूप में कार्य करती हैं, जो दैनिक चुनौतियों का सामना करने हेतु व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती हैं। दार्शनिक स्तर पर, ये कहावतें परिस्थितियों को स्वीकार करने, प्रतिकूलताओं के सामने दृढ़ रहने तथा इच्छाओं और कर्मों में संयम बरतने का संदेश देती हैं।

ये कहावतें पहचान—निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो पीढ़ियों तक एक विशिष्ट बुंदेली आत्मबोध और सामूहिकता की भावना को जीवित रखती हैं। इन कहावतों का संकलन और संरक्षण करके गौरिशंकर उपाध्याय ने इस अमूर्त धरोहर के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा विद्वानों और आमजन को बुंदेलखंड की सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक दृष्टिकोण में झाँकने का अवसर प्रदान किया है।

ISBN Number: 978-93-95305-78-5

7 निष्कर्ष

गौरिशंकर उपाध्याय द्वारा संकलित कहावतें केवल भाषाई जिज्ञासाएँ नहीं हैं, बल्कि जीवन के सघन दर्शन हैं। ये बुंदेलखंड के जीवन–मूल्यों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैंकृभाग्य की स्वीकृति, श्रम के प्रति सम्मान, विवेकशीलता और आध्यात्मिक अनासक्ति। इनके अध्ययन से क्षेत्र के दृष्टिकोण की हमारी समझ समृद्ध होती है और यह स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक निरंतरता में लोककथाओं और कहावतों की कितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ

1. डंडेस, ए. (1975). लोककथाओं का अध्ययन. एंगलवुड क्लिफ्स, न्यू जर्सीः प्रेंटिस–हॉल. पृष्ठ 1—310.
2. मीडर, डब्ल्यू. (2004). कहावतेंरू एक हस्तपुस्तिका. वेस्टपोर्ट, कनेक्टिकटः ग्रीनवुड प्रेस. पृष्ठ 5—198.
3. प्रसाद, एम. (2002). भारतीय कहावतें और उक्तियाँ. नई दिल्लीः साहित्य अकादमी. पृष्ठ 12—245.
4. राय, के. (1998). बुंदेलखंड की लोक परंपराएँ. भोपालः हिंदी साहित्य परिषद. पृष्ठ 33—176.
5. उपाध्याय, जी. (1995). बुंदेली लोकोक्तियों का संकलन. झाँसीः बुंदेली साहित्य मंडल. पृष्ठ 1—320.